पंचम अध्याय–5

पखावज वादको का जीवन परिचय

पंचम अध्याय– पखावज वादको का जीवन परिचय कुदऊ सिंह

उत्तर भारत के पखावज वादकों में महाराज कुदऊ सिंह का नाम इतिहास में स्वर्णाक्षरों से अंकित है। आपका जन्म बांदा जनपद (उत्तर प्रदेश) में 1815 के लगभग हुआ। आपके पिता का नाम गप्पे था। कुदऊ सिंह जी ने पखावज–वादन की शिक्षा भवानी सिंह उर्फ दासजी से प्राप्त किया था।[1]

कुदऊसिंह ने कई रियासतों में अपने कार्यक्रम दिए, किन्तु दतिया के महाराज भवानी सिंह की उन पर विशेष कृपा थी। महाराजा ने ही कुदऊ महाराज का नामकरण कुदऊसिंह किया जिस नाम से उन्होने प्रसिद्धि पाई। जब उन्हें झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के दरबारी संगीतज्ञ के रूप में अग्रेजो ने जेल में डाल दिया, तब भवानीसिंह ने अपने प्रभाव से उन्हे जेल से छुड़ाया।

कुदऊ ने देश के विभिन्न नगरों में अपने कार्यक्रम सफलतापूर्वक दिए। सन् 1847 में उन्होने अवध के नवाब वाजिदअली शाह के दरबार में अनेक प्रसिद्ध कलाकारों के समक्ष अपनी कला का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। नवाब ने प्रसन्न होकर उन्हे सम्मानित किया।

भ्रमण के दौरान कुदऊसिंह रीवा पहुँचे। रीवा नरेश विश्वनाथ सिंह स्वयं कलाकार थे एवं कलाकारों की कद्र करते थे। उन्होने एक कठिन परन का निर्माण किया था। उन्होने घोषणा कर रखी थी कि जो कलाकार इस परन को कुशलतापूर्वक पखावज पर बजा देगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा। कुदऊसिंह ने उस परन को इतनी सफाई से निकाला कि महाराजा ने कुदऊसिंह को सवा लाख रूपए पुरस्कार स्वरूप प्रदान किए। तब से उस परन का नाम ही सवालाखी परन हो गया।[2]

कुदऊसिंह का व्यक्तिगत प्रभावशाली था। उनका कद ऊँचा और शरीर गौरवर्ण था। भुजाएँ कुछ लम्बी थी। पीले रंग का अलफा तहमत, व्याघ्र–चर्म से मढ़ी टोपी, ललाट पर सिंदूर की त्रिरेखा का तिलक, दाए हाथ पर लँगड़ी बुलबुल एवं दाए पॉव

1– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 198 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।
2– भारतीय संगीत एवं संगीतज्ञ राम लाल माथुर पृ0सं0 82, 83 प्रकाशक बोहरा प्रकाशन जयपुर।

पॉव पर लोहे की बेड़ी थी। अग्रेजों ने उस समय जिन्हे बंदी बनाया था। उनके पाँवो में बेड़ियाँ डाली थी। उस समय से ही वे अपने दाएं पाव में बेड़ी पहनने लगे थे। परतंत्रता का यह प्रतीक था।[1]

कुदऊसिंह देवी के परम भक्त थे। उनके दो ही प्रिय कार्य थे देवी की पूजा करना तथा रियाज करना। उनके रियाज करने तथा करवाने का तरीका अजीब था। वे अपने शिष्यों को लेकर रात्रि को बड़ी मोमबत्ती जला कर तब तक बिना रूके अभ्यास करते थे जब तक कि मोमबत्ती पूरी तरह जल कर बुझ ना जाए।

कुदऊसिंह ने एक ग्रंथ लिखा जिसमें एक हजार से भी अधिक परनें थी, ये परने उन्होने किसी को सिखाई नही थीं। कहते है उन्होने यह ग्रंथ अपनी पुत्री को दहेज में दिया था। इसके अतिरिक्त उन्होने कई सुन्दर परनों का निर्माण किया जो कालान्तर में अपने विशिष्ट नामों से प्रचलित एवं प्रसिद्ध हुई जैसे गज, परन, शिवपरन, दुर्गा परन, गणेश परन, अश्व परन आदि।[2]

कुदऊसिंह के बारे में एक किवदंती भी चली आती है कि इनकी गजपरन के परीक्षार्थ एक बार इनके ऊपर हाथी भी छोडा गया और परन बजाते ही वह हाथी भयभीत होकर भाग गया। इस कहावत से यही तथ्य प्राप्त होता है कि आप उस समय के बहुत श्रेष्ठ तथा प्रभावशाली वादक थे।[3]

महाराज कुदऊसिंह के विषय में यह भी उल्लेख मिलता है–

एक दिन बाहर से कोई सितार वादक आने वाला था और उसके साथ दतिया के मृदंग वादक कुदऊसिंह संगति करने वाले थे। कुदऊसिंह का मृदंग वादन सुनने के लिए लोग अत्यन्त व्यग्र थे। महाराजा भवानीसिंह का आगमन हुआ। बनारस के सितार वादक जोशी और मृदंग वादक कुदऊसिंह भी उपस्थित हुए। जोशी द्वारा सितार–वादन शुरू करते ही कुदऊसिंह ने मृदंग पर थाप देकर संगति शुरू की।

1– संगीत अक्टूबर 1986 गोपाल गोलवलकर पृ0सं0 16 प्रकाशक संगीत कार्यलय हाथरस, उ0प्र0।

2– भारतीय संगीत एवं संगीतज्ञ राम लाल माथुर पृ0सं0 83 प्रकाशक बोहरा प्रकाशन जयपुर।

3– हमारे संगीत रत्न लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 628 प्रकाशक संगीत कार्यक्रम हाथरस, उ0प्र0।

लय बढ़ते–बढ़ते अति द्रुत लय मे दोनों का वादन चलने लगा। सितार वादक ने कुदऊसिंह की ओर देखकर कहा ऐसा लगता है कि आप थक गए है।

कुदऊसिंह ने कोई उत्तर नही दिया। मन में इष्टदेव का ध्यान कर कुदऊसिंह ने मृदंग को आकाश में उछाला। आकाश में मृदंग पर सम की थाप सबको सुनाई दी। इस प्रकार उन्होने तीन बार किया। अति द्रुत लय में वादन चल रहा था। सितार वादक ने वादन रोककर कहा– महाराज मैं मनुष्य से प्रतिस्पर्धा कर सकता हूँ देव से नहीं। जिनका मृदंग आकाश में देव बजाते है सम पर थाप देते है वह साधारण मनुष्य नहीं दैवी शक्ति से युक्त है। मैं बाजी हार गया हूँ।[1]

पोथी के अनुसार दतिया दरबार में तत्कालीन दूसरे महान पखावज वादक बाबू जोधसिंह के साथ कुदऊसिंह की सात दिन तक प्रतिस्पर्धा होती रही। अपनी लाज बजाने के लिय कुदऊसिंह ने माँ काली का आवाहन किया और उनकी कृपा से एक अद्वितीय परण का निर्माण किया जिसमे तीन धा था दरबार में बजाते समय इस चक्रदार परन के दो धा तो उन्होने स्वयं बजाये किन्तु तीसरा धा बजाते समय उन्होने पखावज को हवा में उछाल दिया, तब तीसरा धा स्वयं ही ऊपर बजा। बाबू जोधसिंह ने भी इस बंदिश को बजाने का प्रयास किया परन्तु तीसरा धा नही बजा सकें।

आचार्य बृहस्पति ने इस प्रतिस्पर्धा को दतिया नरेश के दरबार में नही बल्कि वाजिद अली शाह के दरबार में होने का उल्लेख किया है।[2]

आपके प्रमुख शिष्यों में अजयगढ़ के सितारे हिन्द मदनमोहन उपाध्याय टीकमगढ़ के हरचरण लाल झल्ली, पर्वत सिंह रामदास, देवकी नंदन पाठक, विष्णुदेव पाठक पुत्र भैया लाल एवं पं0 अयोध्या प्रसाद प्रमुख थे। दतिया में आज भी कुदऊ सिंह की हवेली, उनकी कीर्ति की मूक दर्शन विद्यमान है जो अब अग्रवाल धर्मशाला में बदल गयी हैं। लगभग 95 वर्ष की दीर्घायु भोगने के बाद 1910 के आस–पास परलोक सिधारे।[3]

1– संगीत अक्टूबर 1986 गोपाल गोलवलकर पृ0सं0 16, 24 प्रकाशक संगीत कार्यलय हाथरस, उ0प्र0।

2– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 161 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

3– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 199 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

जोधसिंह

इनका जन्म काशी के एक प्रतिष्ठित राजपूत ब्राहमण परिवार में हुआ था। मध्यमकाल में जो आदर सम्मान और कीर्ति दतिया निवासी कुदऊसिंह ने प्राप्त की, वही आदर सम्मान काशी के संत पुरूष मृदंग वादक श्री जोधसिंह को प्राप्त है।

आप कुदऊसिंह के समकालीन पखावज वादक थे। आपके गुरू महान पखावज वादक लाला भवानी दीन जी थे। जिनका समय सन् 1700 ई0 के पश्चात् का माना जाता है।[1] श्री कुदऊसिंह का बाज जितना कठिन था, जोधसिंह का उतना ही सीधा व सरल था। इसका एक उदाहरण श्री भरत व्यास (जोकि महाराज कुदऊसिंह के घराने के शिष्य हैं।) इस प्रकार बताया करते है– धड़न्न, तडन्न, द्वे द्वे धिलांग, कृद्धे धुमकिट धिट, तिट, धेत्ता, तड़धा, थुंगा, तक्का आदि ऐसे उखाड़–पछाड़ के बोल कुदऊसिंह के है। किन्तु जोधसिंह जी के किटतक, तिरकितका, धातिकृधान, किटथुं, नगतिरकिटतक, गदी, गदिगन, धिटतिट ताधिड़नग, नकिटतगन, किड़नग, नगधे, धिरकिटधे, किड़नाधित्ता, कृधिंता आदि बोलों में कोमलता है। इस प्रकार उक्त दोनों कलाकारो के बोलों में अलग–अलग विशेषताएँ पाई जाती है।[2]

बाबू जोधसिंह से नाना पानसे ने 12 वर्षो तक अत्यन्त निष्ठा एवं लगन से शिक्षा ग्रहण किया। गुरू के सान्निध्य में घंटो साधना का क्रम क्रियात्मक रूप से चलता रहा। आपकी साधना रंग लाई और सम्पूर्ण भारत में आपके समक्ष अन्य कोई पखावज वादक नहीं था। काशी से शिक्षा प्राप्त कर आप अपने नगर इन्दौर लौट गए। मध्य तथा दक्षिण भारत में काशी के बाबू जोधसिंह द्वारा प्राप्त पखावज वादन कला का प्रचार–प्रसार करने का श्रेय बाबू जोधसिंह के परम यस्सवी शिष्य नाना पानसे को जाता है।[3]

1– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 168 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

2– हमारे संगीत रत्न लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 639 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

3– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 169 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

नाना पानसे

संगीतशास्त्रियों के अनुसार नाना साहब पानसे का जन्म 1820 के आसपास महाराष्ट्र के वाई के पास बवधन नामक गाँव में हुआ था। पखावज की प्रारम्भिक शिक्षा इन्हें अपने पिता से प्राप्त हुई। तत्पश्चात् पुणे के दरबारी कलाकार मान्यबा जी कोडीतकर एवं वाई के चौण्डे बुआ एवं मार्तण्ड बुआ से प्राप्त किया।[1]

एक बार किशोरावस्था में इन्हें अपने पिता के साथ कीर्तन मण्डली में काशी जाने का अवसर मिला। वहां श्री जोधसिंह पखावजी का पखावज वादन सुनकर ये अत्यन्त प्रभावित हुए। पिता की आज्ञा से काशी में उनके पास बारह वर्ष तक रहकर पखावज वादन सीखते रहे। इन्दौर लौटने पर आपने पाचं सौ शिष्य तैयार किये ऐसा कहा जाता है। इसीलिये आप 'पानसे' कहलाते थे। नाना साहेब असाधारण प्रतिभाशाली कलाकार थे। सीखे हुए परन और बोलों का आपने गणित की तथा शास्त्र की दृष्टि से परिमार्जन किया। अनेक सुन्दर बोल, परने, टुकड़े, टेके आदि की आपने रचना की। आप तबला वादन तथा नृत्यकला में भी पारंगत थे। अपने कुछ शिष्यों को आपने नृत्य की शिक्षा भी दी। तबला वादकों की सम्मान–रक्षा हेतु आपने 'सदुर्शन' नामक एक नवीन ठेके की रचना भी की थी।[2]

नाना साहब निरभिमानी और सरल स्वभाव के व्यक्ति होने के साथ–साथ बड़े संतोषी जीव थे। आपको इंदौर का राज्याश्रय प्राप्त था। योग्यतानुसार राज्यकोष से आपको बहुत कम वेतन मिलता था, इस पर भी इन्हें असंतोष न था। एक बार ग्वालियर–नरेश महाराज जयाजीराव इंदौरा आए। उन्होंने नाना साहब का पखावज–वादन सुना और अत्यंत प्रभावित हुए। इंदौर–नरेश श्री तुकोजीराव होल्कर से उन्होंने नाना साहब को ग्वालियर ले जाने की माँग की। इंदौर–नरेश ने यह प्रश्न नाना साहब की मर्जी पर छोड़ दिया, परन्तु नाना साहब ने अधिकाधिक आर्थिक

1– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 170 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

2– मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ प्यारे लाल श्रीमाल पृ0सं0 7 प्रकाशक मध्य प्रदेश शासन साहित्य।

प्रलोभन होते हुए भी ग्वालियार जाने के लिए अपनी स्वीकृति नहीं दी। इस घटना से आपकी संतोषी प्रवृत्ति का प्रमाण मिलता है।[1]

इनके पट शिष्यों में बलवन्त राव पानसे (पुत्र), शंकर भैया पानसे (पुत्र), वामन राव चाँदवडकर, पं0 सखाराम तावड़े (पौत्र), सखाराम आगले, केशव बुआ दीक्षित, यशवन्त राव गोडवोले, दत्तात्रेय भोंसले आदि के नाम लिये जाते हैं। इनके कई शिष्यों ने इनके वादन की विधिवत आगे बढ़ाया। ऐसा कहा जाता है, कि नाना साहब के 500 शिष्य थे। कुछ लोगों का कहना है कि 500 सौ को मराठी में पानसे कहा जाता है। इस कारण नाना साहब के नाम के साथ पानसे जुड़ा और आगे चलकर उनकी यह वादन शैली पानसे घराने से प्रसिद्ध हुई।[2]

घनश्याम पखावजी

श्रीनाथद्वारा (राजस्थान) के प्रसिद्ध पखावजी शंकरलाल के पुत्र घनश्याम पखावजी के जन्म सन् 1869 ई0 में ज्येष्ठ कृष्णा 8 को हुआ था। जब आपकी अवस्था 7 वर्ष की थी, तभी से आप श्री नाथजी के मंदिर में अपने पिताजी के पास बैठकर मृदंग–वादन सुना करते थें। फलतः आपके हृदय में कला संस्कार अंकुरित हो गए। 13 वर्ष की आयु में आपका विवाह हो गया और अपने पिता से मृदंग–वादन की नियमित शिक्षा भी आपको प्राप्त होती रही। परिणाम स्वरूप आपने मृदंग–वादन में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली।[3] ''श्री घनश्याम पखावजी के काका श्री खेमलाल जी लय–ताल के प्रकाण्ड विद्वान थे और उन्होंने मृदंग सागर नामक पुस्तक लिखनी शुरू की थी। परन्तु उनकी मृत्यु हो गई और वह पुस्तक अधूरी रह गई। उस समय घनश्याम जी की आयु मात्र 8 वर्ष की थी। उनके पिता शंकर लाल जी ने भी उस अर्द्धलिखित पुस्तक को पूर्ण करना चाहा, परन्तु उनकी भी मृत्यु सम्वत् 1950 में हो गई। फिर भी घनश्याम जी ने अपने परिवार की पारस्परिक कला को संजो कर रखा

1– हमारे संगीत रत्न–लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 645 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस उ0प्र0

2– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 171 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

3– हमारे संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 346 प्रकाशक संगीत कार्यक्रम हाथरस, उ0प्र0।

और मृदंग सागर नामक पुस्तक को पूर्णकर शंकरजी सुत घनश्याम पखावजी के नाम से सन् 1911 में प्रकाशित कर संगीत सेवा यज्ञ में एक अहुति अर्पित की। आपकी मृत्यु 1932 के लगभग हुई।''[1]

इनके एक मात्र पुत्र पद्मश्री पुरूषोतम दासजी हुये जिन्होने अपने पूर्वजो का मान सम्मान रखते हुये अनेक वर्षो तक श्रीनाथ जी के मंदिर में सेवारत रहें।[2]

सखाराम पन्त आगले

पं0 सखराम पन्त आगले नाना पानसे घराने के प्रमुख कलाकारों में एक थें। आपने अपने परिश्रम प्रतिभा के बल पर नाना पानसे घराने एवं संगीत जगत में प्रमुख पूर्ण स्थान प्राप्त किया। आपका जन्म औरंगाबाद जिले के अन्तर्गत वैजापुर नामक स्थान पर सन् 1858 के लगभग हुआ। जब आपकी आयु 12–13 वर्ष की थी तभी से आपने मृदंग केसरी नाना साहब पानसे के पास इन्दौर में शिक्षा प्राप्त की। अपूर्व गुरू–भक्ति और तीव्र निष्टा द्वारा 16 वर्ष तक आपने शिक्षा ग्रहण करके इन्दौर में दरबारी मृदङ्गाचार्य का पद प्राप्त कर लिया।[3]

आपकी गणना देश के गुणीं वादकों में होने लगी। उस समय के मूर्धन्य गायक उ0 रहमत खाँ, निसार हुसेन खाँ, पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर तथा बझे बुआ आपका बहुत आदर करते थें। आपने सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया और जहाँ भी गये आपन अद्भुत वादन और आकर्षण व्यक्तित्व से सभी का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। आपके यशस्वी पुत्र अम्बादास पंत आगले की कर्मभूमि भी इन्दौर रही और उन्होने भी राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति अर्जित की। पं0 सखाराम पंत आगले की मृत्यु सतारा (महाराष्ट्र) में सन् 1918 में हुई।[4]

1– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 200 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

2– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 175 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

3– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 1276 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

4– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 213 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

ठाकुर लक्ष्मण सिंह

महाराज चक्रधर सिंह के गुरू ठाकुर लक्ष्मण सिंह का जन्म रायगढ़ के कुलीन क्षत्रिय कुल में भाद्रपद कृष्ण 8 विक्रमीय संवत् 1929 तदनुसार ई0 सन् 1872 में हुआ था। पिता का नाम ठाकुर रामचरन सिंह तथा माता का श्रीमती चिंताकुमारी देवी था। पिता श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त, संगीतज्ञ तथा रियासत रायगढ़ के वाला आफिसर थे। ठाकुर लक्ष्मण सिंह की बड़ी बहन श्रीमती मोहनकुंवर लोकगीतों की कुशल गायिका थी तथा भाई ठाकुर रघुवर सिंह भी ध्रुपद, धमार, चेती पूर्वी के विशेषज्ञ गायक थे। आपके दोहित्र धर्मराजसिंह तथा महेन्द्र प्रताप सिंह क्रमशः मृदंग तथा तबले के कुशल कलाकार हैं। भतीजे ठाकुर भीखम सिंह मृदंग प्रभाकार हैं तथा भानजे ठाकुर जगदीश सिंह 'दीन' मृदंगार्जुन की उपाधि से विभूषित हैं।

रायगढ़ के मठाधीश संगीताचार्य महन्त श्री गोपालदास से ठाकुर लक्ष्मणसिंह ने तबला वादन की शिक्षा ली थी। अयोध्या के संगीताचार्य पं0 भूषण से गायन तथा कोयम्बतूर निवासी पं0 शोभाराम अय्यर से घट वाद्य सीखा। रायगढ़ नरेश भूपदेव सिंह ने आपके अपने दरबार में नियुक्ति किया था। वहा आप देश के जिन महान् संगीतज्ञों के संपर्क में आये उनमें पं0 नारायणराव व्यास, भाईलाल पटियाला वाले, कादरबख्श, जमालखां, करमइलाही, मुनीरखां, बुढ़ऊ खवास, बंकिमचन्द्र बांकुड़ा, पं0 जयलाल महाराज, मुहम्मदखां बांदावाले, पं0 कृष्णराव पंडित के नाम उल्लेखनीय हैं। संगीतज्ञों पं0 विष्णु दिगम्बर पलुस्कर ने दरबार में आपके संगीत–ज्ञान की सराहना की थी।

1– मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ प्यारे लाल श्रीमाल पृ0सं0 287 प्रकाशक मध्य प्रदेश शासन साहित्य।

मक्खन जी पखावजी

ब्रज भूमि के प्रसिद्ध पखावजी मक्खनलाल जी ने अपने कला चातुर्य द्वारा संगीत क्षेत्र में जो ख्याति प्राप्त की थी। उसे संगीत प्रेमी भली प्रकार जानते है। आपका हाथ मक्खन जैसा मधुर और मुलायम था इसलिए आपका मृदंग–वादन आकर्षक होता था। स्वः उस्ताद फैयाज खाँ तो आपकी पखाव पर बहुत मुग्ध थे।

सन् 1876 ई0 के लगभग मक्खन जी का जन्म हुआ था। उन्होने बनारस बाज के विशेषज्ञ स्व0 कुदऊसिंह के शिष्य मदन मोहन जी और गंगाराम जी से शिक्षा प्राप्त की। बाद में आपने पंजाब के प्रसिद्ध पखावजी भवानीशंकर से भी शिक्षा प्राप्त की थी। भवानीशंकर दुक्कड़–बाज के विशेषज्ञ थे और पखावज बहुत सुन्दर बजाते थे।[1]

आपने अनेक देशों में अपनी कला का अनूठा प्रदर्शन देकर उत्कृष्ट प्रसिद्धि प्राप्त की थी। तथा आप कला प्रदर्शन के माध्यम से ही धन एवं यश अर्जित किया करते थे। जब श्री मक्खन जी 50 वर्ष के थे तो वे बम्बई चले गये और वहाँ पर 25 वर्षो तक संगीत प्रेमी धनी सर गोकुल दास पसता के यहाँ रहे। उसके पश्चात् कुछ दिनों तक माधव बाग मंदिर में सेवारत रहे। श्री मक्खन जी अपने जीवन की वृद्धावस्था में पखावज में ही लीन रहने लगे थे। आप कुछ समय के पश्चात् बम्बई को छोड़कर मथुरा वापस आ गये और वही पर आपका 21 फरवरी सन् 1951 में शरीरांत हो गया।[2]

1– भारत के संगीत रत्न लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 1276 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

2– प्रमुख ताल वाद्य पखावज तथा तबले की विभिन्न परम्पराएँ डॉ0 मोहिनी वर्मा पृ0सं0 96 प्रकाशक अनुभव पब्लिशिंग हाउस।

पर्वत सिंह

सन् 1879 ई0 के लगभग पर्वत सिंह मृदंगाचार्य का जन्म ग्वालियर में हुआ। आपका पूर्व वंश मृदंग–वादन के लिए प्रसिद्ध रहा है। आपके परदारा स्व0 जोरावर सिंह जी जब ग्वालियर राज्य में आए थे, उस समय ग्वालियर में श्रीमंत जनकोजीराव शिंदे शासन कर रहे थे। ग्वालियर दरबार में जोरावरसिंह जी को आश्रय प्राप्त हो गया, अतः वे स्थायी रूप से ग्वालियर में ही निवास करने लगे।

मृदंग वादन की शिक्षा अपने–अपने पिता सुखदेव सिंह से प्राप्त किया। बाल्यावस्था में पर्वत सिंह की पखावज सुन कर महाराजा ग्वालियर ने पाँच सौ रूपये तथा एक चोगा पुरस्कार स्वरूप प्रदान किया था। बड़े होने पर आप भी महाराजा ग्वालियर के आश्रय में रहे। लगभग पन्द्रह वर्ष तक आपको बम्बई में रह कर देश के उच्चकोटि के कलाकारों के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। आपका नाम भी वहां से दूर–दूर तक फैल गया।[2]

जब आपकी अवस्था पच्चीस वर्ष की थी, तब आप बम्बई गए। वहाँ पर उस समय के प्रसिद्ध संगीतज्ञों से आपने परिचय प्राप्त किया। जिनमें अल्लादिया खाँ, पं0 विष्णुदिगम्बर पलुस्कर, नजीर खाँ साहब, भास्कर बुवा, प्रसिद्ध सितार–वादक नरकतुल्ला खाँ के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। कई प्रसिद्ध सितारिए तथा ध्रुवपद गायको का साथ आपने वहाँ पर किया। इस प्रकार आपकी कला निखरती गई और बम्बई में आपका नाम हो गया लगभग पन्द्रह वर्ष तक आप बम्बई रहें।[3]

सन् 1926 में भारत धर्म महामण्डल के अध्यक्ष दरभंगा महाराज ने आपको विद्याकला विशारद की उपाधि से सम्मानित किया था। पाश्चात्य देशों से भी आपको निमंत्रण मिले किन्तु वृद्धावस्था के कारण आप जा न सके। आपके मृद्रंग वादन के कार्यक्रम आकाशवाणी दिल्ली से प्रसारित होते रहते थे। पखावज के अलावा आप

1– हमारे संगीत रत्न – लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 646 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

2– मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ – प्यारे लाल श्रीमाल पृ0सं0 198 प्रकाशक मध्य प्रदेश शासन साहित्य।

3– हमारे संगीत रत्न – लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 646 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

तबला भी बहुत अच्छा बजाते थे। मृदंगाचार्य पर्वत सिंह तथा उस्ताद हाफिज अली खाँ की जोड़ी गुणियों में बहुत प्रसिद्ध थी।[1]

प्रो0 पर्वत सिंह का स्वभाव अत्यन्त सरल और रहन–सहन सादा था। आप कलाकारों का आदर करते थे और अभिमान से दूर रहकर विनयशीलता को महत्व देते थे। 18 जुलाई 1951 ई0 को ग्वालियार में आपका शरीरत हुआ। आपके बाद आपके पुत्र स्व0 माधव सिंह ने ग्वालियार दरबार में पखावज वादक के रूप में तथा दूसर पुत्र गोपाल सिंह ने गिटार वादक के रूप में पर्याप्त यश अर्जित किया है।[2]

सखाराम मंदृगाचार्य

नाना पानसे घराने के सुप्रसिद्ध पखावज वादक पं0 सखाराम मृदंगाचार्य का जन्म 25 अक्टूबर 1879 को विजयादशमी के दिन हुआ था इनके संगीत प्रेमी पिता का नाम पं0 रामचन्द्र तावड़े था। इनके परिवार में सगीत का अच्छा वातावरण होने के कारण इन्हे जन्म से ही अच्छा संगीत सुनने का मौका मिलता रहा। इनकी शैक्षणिक शिक्षा मराठी स्कूल से हुई। इन्होने मात्र 3 कक्षा तक की पढ़ाई पूर्ण कर 10 वर्ष की आयु से संगत साधना की ओर अग्रसर हो गये। पं0 जी की मृदंग की शिक्षा इन्दौर में उस समय के विख्यात पखावज वादक नाना साहब पानसे के पुत्र वाला साहब पानसे तथा दौहित्र शंकर भैया द्वारा सम्पन्न हुई।[3]

तालीम पाने के बाद सन् 1898 से सन् 1904 तक आपने नाट्य कला प्रवर्तक संगीत–मण्डली नामक एक नाटक कम्पनी में नौकरी कर ली। कम्पनी क साथ–साथ विभिन्न स्थानों का भ्रमण करके आपने अनुभव प्राप्त किया। सन् 1904 में जब यह कम्पनी ग्वालियर पहुँची, तो ग्वालियर नरेश माधवराव सिंधिया ने इनके पखावज वादन

1– मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ प्यारे लाल श्रीमाल पृ0सं0 198 प्रकाशक मध्य प्रदेश शासन साहित्य।
2– हतारे संगीत रत्न लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 647 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।
3– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 173 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

से प्रसन्न होकर इन्हे अपने यहाँ रख लिया। यहाँ पर आपने लगभग सोलह वर्ष तक नौकरी की।[1]

सखाराम जी सन् 1926 में लखनऊ में मैरिस म्यूजिक कालेज (वर्तमान नाम भारतखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय) लखनऊ में प्राध्यापक नियुक्त हुये और जीवन के अन्तिम क्षणों तक वही रहे। कुछ दिनों तक आप शिवगढ़ रियासत मे भी रहे। अपने युवा पुत्र सदाशिव राव की असामयिक मृत्यु से सखाराम जी टूट से गये। आपने मृदंग तबला शिक्षा नामक एक पुस्तक भी लिखी थी।

लखनऊ में 19 जनवरी सन् 1967 में आपका शरीरात हुआ।[2]

पं0 सखाराम जी के मृदंग तथा तबला वादन शिष्यों में प्रमुख नाम है– आपके पौत्र विनायकराव, कुँवर जयराज सिंह, त्रिभुवन उपाध्याय, रमाकान्त पाठक, गिरिजाशंकर, सदाशिवराव, दत्तात्रेय, भट्टाचार्य, विवेकानन्द तथा कृष्णकान्त त्रिपाठी।[3]

अयोध्या प्रसाद

कुदऊ सिंह घराने के अयोध्या प्रसाद का नाम स्मरणीय है। पं0 अयोध्या प्रसाद जी का जन्म संगीतज्ञों के परिवार में 5 अगस्त 1891 में दतिया मध्यप्रदेश में हुआ था। आपके पिता जी का नाम पं0 गया प्रसाद था एवं पितामह का नाम श्रीराम सिंह था जो कि महाराज कुदऊ सिंह के अनुज थे। आपकी पखावज की प्रारम्भिक शिक्षा आपने पितामह से हुई तथा उनकी मृत्यु के पश्चात् आगे की शिक्षा आपने अपने पिता से प्राप्त किया।[4]

1– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 1277 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

2– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 212, 213 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

3– मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा डॉ0 शर्मिला टेलर पृ0सं0 121 प्रकाशक नवजीवन पब्लिकेशन्स।

4– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 198 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

पंडित अयोध्या प्रसाद का पखावज–वादन अधिकतर दिल्ली तथा लखनऊ के आकाशवाणी केन्द्रो से प्रसारित होता रहता था। राष्ट्रीय कार्यक्रमों में भी आप कई बार भाग ले चुके थे और विभिन्न उत्कृष्ट गायक–वादकों के साथ पखावक संगत करके आपको अपूर्व ख्याति मिली थी। आपकी दृष्टि में संगति की आदर्श पद्धति का निर्वाह तभी सम्भव है जबकि दोनों कलाकार एक दूसरे के स्वभाव से परिचित हो।[1]

आपने रामपुर के उस्ताद वजीर खाँ साहब तथा नवाब छम्मन खाँ साहब से सैकड़ो ध्रुपद याद किये।

पं0 अयोध्या प्रसाद के चार पुत्रों में से दो नारायण प्रसाद और कुन्दर प्रसाद की मृत्यु असमय ही हो गयी। आपके एक पुत्र श्री रामजी लाल शर्मा आकाशवाणी के लखनऊ केन्द्र में विभागीय कलाकार के रूप में सेवारत है।

पं0 जी समय–समय पर रामपुर, नेपाल, अजयगढ़ एवं हैदराबाद के राज दरबारों में सभासद के रूप में रहे। भारत सरकार ने आपको सम्मानजनक पद्यश्री की उपाधि से अलंकृत किया। 86 वर्षो की दीर्घायु भोग कर आप 28 दिसम्बर 1977 को स्वर्गवासी हुये।[2]

भगवान दास

भगवान दास एक कुशल मृदंग वादक थे। आपकी कला संगीत जगत में काफी विख्यात थी। आपका जन्म सन् 1891 में इलाहाबाद जनपद में हुआ था। आप बचपन से ही रामलीला मण्डलियों से जुडे रहे। आपने ग्वालियर में बाबा विश्रामदास से दीक्षा प्राप्त की और अयोध्या चले गये। वहाँ पर आपने मृदंग सम्राट कुदऊ सिंह की परम्परा के श्री राममोहिनी शरण से मृदंग वादन की शिक्षा प्राप्त की। इसी कारण आप मृदंगाचार्य स्वामी भगवान दास के रूप में विख्यात हुए।[3]

1– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 72 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

2– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 97, 98 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

3– प्रमुख ताल वाद्य पखावज तथा तबले की विभिन्न परम्पराएँ डॉ0 मोहिनी वर्मा पृ0सं0 93 प्रकाशक अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

आपने आपना कार्यक्षेत्र अयोध्या के कनक–भवन और हनुमत् विश्वकला संगीताश्रम तक ही सीमित रखा। मन्दिर में भगवान के समक्ष मृदंग बजाना और योग्य पात्रो को उसकी शिक्षा देने में ही आप परम सन्तोष का अनुभव करते थे। आपके तीन प्रमुख शिष्यों में सरयूदास, वसुमित्र शास्त्री और अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त स्वामी रामशंकर पागलदास के नाम उल्लेखनीय है।

स्वामी पागलदास भगवान दास जी में बहुत श्रद्धा रखते थे इस लिए उनके बार में सदैव चर्चा करते रहते थे। उन्ही के विशेष सहयोग से बाबा की स्मृति में उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी, लखनऊ मृदंगाचार्य स्वामी भगवानदास स्मृति ध्रुपद समारोह का आयोजन करती है। 11 अप्रैल सन् 1976 को स्वामी भगवान दास का निधन हो गया।[1]

पुरूषोत्तमदास

पुरूषोत्तमदास जी एक प्रमुख पखावज वादक थे। आपका जन्म (मेवाड़) नाथद्वार में सन् 1907 में हुआ था। पुरूषोत्तमदास के पिता श्री घनश्याम जी एक प्रसिद्ध पखावजी थे। पुरूषोत्तमदास अपने पिता की सबसे अनुज सन्तान थे। पुरूषोत्तमदास जी उच्चकोटि के पखावज वादकों में से एक माने जाते हैं। आपके पिता ने मृदंग सागर नामक पुस्तक लिखी थी। पुरूषोत्तमदास जी की अल्य आयु में ही उनके पिता का देहान्त हो गया था। कहा जाता है कि तब वे 12 वर्ष के ही थे। इसी कारण वे अपने पिता से अधिक समय तक शिक्षा ग्रहण नहीं कर सके थे। लेकिन इतनी छोटी उम्र में ही उन्होने अपने पिता से हाथ में ताल देकर बोलों को पढ़ने की शिक्षा सीखना प्रारम्भ कर दिया था।[2]

1– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 785 प्रकाशक संगीत कार्यक्रम हाथरस, उ0प्र0।

2– प्रमुख ताल वाद्य पखावज तथा तबले की विभिन्न परम्पराएँ डॉ0 मोहिनी वर्मा पृ0सं0 94, 95 प्रकाशक अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

एक और जहाँ इन्हे अपने परिवार के निर्वहन की चिन्ता थी तो वही दूसरी और अपनी परम्परा को भी बचाये रखना था। उस समय गोस्वामी गोवर्द्धनलाल जी ने आपकी सहायता की और पारिवारिक भरण–पोषण के लिये एवं शिक्षा संबंधी सहायता प्रदान करने हेतु मन्दिर में रख लिया। आपका पखावज सीखना जारी रहा।[1]

पुरूषोत्तमदास जी के पिता नाथ द्वारा मन्दिर में सेवा कर रहे थे। उसी मन्दिर में अपने पिता का स्थान ग्रहण करके पखावज वादके के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। आप कुछ समय तक नाथ द्वारा मन्दिर मण्डल द्वारा संचालित श्री नाथ संगीत शिक्षण केन्द्र के प्रधानाचार्य भी रहे तत्पश्चात् दिल्ली के भारतीय कला केन्द्र में आ गये। आपने 1961 से 1964 के बीच नेपाल, जापान, रूस, श्रीलंका की यात्रा की। आपने नई दिल्ली द्वारा संचालित कत्थक केन्द्र समारोह एवं अखिल भारतीय हवेली संगीत समारोह का आयोजन कराया था।[2]

भारतीय कला केन्द्र में कई विद्यार्थियो ने इनसे शिक्षा ग्रहण की। जिनमें इनके कुछ मुख्य शिष्य श्री दुर्गालाल, भगवत उप्रेती, तुलसी नारायण, रामचन्द्र, मुरली तथा रामलखन आदि है। तत्पश्चात् यह कत्थक केन्द्र नई दिल्ली में शिक्षक के रूप में कार्य कर रहे है। दिल्ली ने रहते हुए यह कई कार्यक्रमों में जर्मनी जापान आदि देशों में भी गये और वहां के संगीत रसिकों को अपनी पखावज वादन की कला से मुग्ध किया।[3]

श्री पुरूषोत्तमदास जी ने 1965 में भारतीय कला केन्द्र, दिल्ली में कार्यभार ग्रहण किया। आपने 1961 से 1986 तक अखिल भारतीय हवेली संगीत समारोह का आयोजन भी किया। श्री पुरूषोत्तमदास जी को भारत सरकार ने सन् 1964 में पद्यश्री के सम्मान से अलंकृत किया एवं राजस्थान संगीत नाटक अकादमी ने सन् 1989 में सम्मानित किया।

1– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 187 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

2– प्रमुख ताल वाद्य पखावज तथा तबले की विभिन्न परम्पराएँ डॉ0 मोहिनी वर्मा पृ0सं0 95 प्रकाशक अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

3– मृदंग वादन (नाथद्वारा परम्परा) पुरूषोत्तम दास जी प्रस्तुकर्ता भगवत उप्रेती पृ0सं0 4 प्रकाशक संगीत नाटक अकादमी।

दिल्ली से सेवा निवृत्ति के पश्चात् आप श्रीमान संगीत शिक्षण केन्द्र भी नाथद्वारा में प्रधानाचार्य के पद पर रहे और वही 1 जनवरी 1991 को शरीरात हुआ।[1]

ठाकुर भीखम सिंह गौतम

पखावज परिजात में ठाकुर भीखम सिंह गौतम ने अपना परिचय इस प्रकार दिया है। दरोगा मूड़ा रायगढ़ के सम्मानीय राजपूत क्षत्रिय घराने में 8 मार्च 1910 ई0 मे मेरा जन्म हुआ। पिता स्व0 श्री रघुवर सिंह गौतम माल गुजार का तृतीय पुत्र हूँ। बाप दादा संगीत के प्रकान्ड विद्वान थे। विरासत में मुझे संगीत विद्या मिली है। स्कूली शिक्षा के बीच बचपन में ही मुझे गाने एवं गुनगुनाने और नाटक में भाग लेने का बड़ा शौक था। उसी से प्रसन्न हो, हारमोनियम तथा तबला का शिक्षण मेरे बड़े दादा (पिता) संगीत शिरोमणि स्व0 ठा0 लक्ष्मण सिंह गौतम से प्राप्त हुआ जो स्व0 राजा श्री चक्रधर सिंह जी के संगीत गुरू थे।

पूज्य बड़े पिता जी के कारण भारत प्रसिद्ध बड़े–बड़े संगीत के गुणियों से परिचय हुआ। स्व0 बाबा श्री ठाकुर दास मृदंगाचार्य अयोध्या की असीम कृपा से सन् 1936 से 1941 तक मृदंग (पखावज) की शिक्षा मिली। अनवरनत कठिन परिश्रम व सेवा से उन्हें प्रसन्न कर, एक से एक महात्माओं की रचनाओं के साथ–साथ मृदंगाचार्य श्री कोदऊ सिंह, उस्ताद पर्वत सिंह, बाबा राजकुमार दास, मदनमोहन उपाध्याय ख्याति प्राप्त गुणियों की रचनाओं का ज्ञान प्राप्त हुआ। मृदंगाचार्य श्री शंकरराव अलकटकर से व पं0 भूषण संगीताचर्य से अलग–अलग बोलों का ज्ञान मिला।[2] सन् 1942 में आपको रेलवे में गार्ड की नौकरी मिलने पर भी अपने मृदंग के अभ्याय को जारी रखा। आकाशवाणी केन्द्र नागपुर से आपके मृदंगवादन के कार्यक्रम प्रसारित होते रहे। सन् 1941 में भारतेन्दु साहित्य समिति द्वारा आयोजित संगीत सम्मेलन में आपको **''पखावज भूषण''** की उपाधि से सम्मानित किया गया।[3]

1– ताल परिचय भाग–3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 205 प्रकाशक रूबी प्रकाशक, इलाहाबाद।
2– पखावज परिजात ठाकुर भीखम सिंह गौतम पृ0सं0 2 प्रकाशक मुद्रक संगीत प्रेस मालाका इलाहाबाद।
3– मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ प्यारे लाल श्रीमाल पृ0सं0 301 प्रकाशक मध्य प्रदेश शासन साहित्य।

1963 में प्रयाग संगीत समिति से मृदंग में **''संगीत प्रभाकर''** की उपाधि प्रथम श्रेणी में ली और 1965 में बिहार के मृदंगाचार्य श्री स्व0 राम लाल तिवारी से **''मृदंगाचार्य''** की उपाधि से सम्मानित हुआ। 1950 से 1954 तक आकाशवाणी नागपुर का कलाकार रहा व अम्बिकापुर आकाशवाणी का कलाकार एवं 1984 तक आकाशवाणी के स्वर परीक्षण बोर्ड का सदस्य रहा। बड़े–बड़े ध्रुपदियों तथा सितार वादकों के साथ बहुत संगत किया एवं सोलो वादन भी खूब किया।[1]

छत्रपति सिंह

छत्रपति सिंह, कुदऊ सिंह घराने के प्रतिनिधि कलाकारो में एक थें।

उत्तर प्रदेश के झांसी जनपद में बिजना नामक एक रियासत संगीत के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध थी। उसी परिवार में सन् 1919 में राजा मुकुन्द सिंह के पौत्र और राजा हिम्मत सिंह जी के पुत्र के रूप में बालक छत्रपति सिंह का जन्म हुआ।[2]

आपने पखावज वादन स्वामी रामदास जी से प्राप्त किया था। ''स्वामी रामदास जी कुदऊ सिंह के सुयोग्य शिष्य पं0 मदन मोहन जी पखावज की शिक्षा ग्रहण की थी। इस प्रकार से राजा छत्रपति सिंह जी कुदऊ सिंह घराने के प्रतिनिधि पखावज वादके थे। आप एक सफल सोलो कलाकार के साथ ही उच्च कोटि के सफल संगतकार भी थे।[3]

पखावज वादन का समर्पित राजा छत्रपित सिंह को उनके संगीतिक जीवन में अनेक मान–सम्मान मिले। उनमे से कुछ इस प्रकार हैं। सन् 1951 में संगीत मार्तण्ड पं0 ओमकार नाथ ठाकुर द्वारा प्रोफेसर ऑफ पखावज 1954 में आल इंडिया म्यूजिक कान्फ्रेन्स ट्रस्ट कलकत्ता की परीक्षा में प्रथम स्थान केन्द्रीय संगीत नाटक अकादमी,

---

1– पखावज परिजात ठाकुर भीखम सिंह गौतम पृ0सं0 2 प्रकाशक मुद्रक संगीत प्रेस मालाका इलाहाबाद।

2– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 201 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

3– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 182 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

दिल्ली पुरस्कार और इसके पूर्व ही उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी लखनऊ द्वारा रत्न सदस्यता सुर सिंगार संसद, मुम्बई द्वारा ताल विलास।[1]

छत्रपति सिंह जी एक सफल सोलो वादक के साथ–साथ उच्चकोटि के संगीतकार भी थे। आप ताल शास्त्र के एक गम्भीर, चिन्तक, विचारक और रचनाकार थे। आपने 4, 6, 7 और 108 मात्रा की तालों का मिश्रण करके चतुरंग, वेदांग ताल सागर और ताल मात्रा नाम से नवीन सृजन किया है। आपने 1975 से विदेश भ्रमण करना प्रारम्भ कर दिया था और अब तक अनेक देशों में अपने वादन को गुंजायमान कर चुके है। आप विजना किला में एक संगीत विद्यालय के संचालक के द्वारा संगीत की सेवा कर रहे है। संगीत के साथ–साथ खेल में भी आपकी काफी रूचि है। शतरंज आपका प्रिय खेल है। राजा छत्रपति सिंह एक उच्चकोटि के कलाकार के साथ–साथ उत्कृष्ट रचनाकार भी हैं।

आपके शिष्यों में मुख्य रूप से कु0 चित्रांगना पंत आगले, प्रवीण आर्य, अखिलेश गुंदेचा, सुन्दर लाल, अनीश कुमार एवं अनेक विदेशी छात्र है।[2]

अम्बादास पंत आगले

मृदंगाचार्य अम्बादास पन्त आगले का जन्म सन् 1920 में इन्दौर नगर में हुआ। आपके घराने की संगीत परम्परा दीर्घ काल से उच्च कोटि की रही है। आप भारत विख्यात मृदंगाचार्य सखाराम आगले के सुपुत्र थें। मृदंग–वादन कला आपने अपने पिता से प्राप्त की। पिता जी की सत्प्रेरणा और अपने अटूट परिश्रम के द्वारा आपने 20 वर्ष की आयु से ही इन्दौर दरबार से मृदंगाचार्य पद प्राप्त करके कीर्ति अर्जित की। कई वर्षो तक इन्दौर महाराज के आश्रय में रहने के पश्चात् अम्बादास ने लखनऊ के मैरिज म्यूजिक कॉलेज में भी कुछ दिनों तक अध्यापन कार्य किया।[3]

1– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 201 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

2– प्रमुख ताल वाद्य पखावज तथा तबले की विभिन्न परम्पराएँ डॉ0 मोहिनी वर्मा पृ0सं0 94 प्रकाशक अनुभव पब्लिशिंग हाउस, इलाहाबाद।

3– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 71 प्रकाशक संगीत कार्यक्रम हाथरस, उ0प्र0।

पं0 जी नाना साहब पानसे घराने की वादन शैली के अनुसार सुन्दर वादन करते थे। आपके वादन में उत्कृष्ट लयकारी, बोलो की स्पष्टता एवं लचीलापन का सुन्दर समन्वय सुनने को मिलता था। आपने कई बार आकाशवाणी के राष्ट्रीय कार्यक्रम के अन्तर्गत अपना पखावज वादन प्रस्तुत किया।[1]

''बम्बई के एक कार्यक्रम में प्रसिद्ध फिल्म निर्माता श्री व्ही शान्ताराम उपस्थित थे। वे इतने प्रसन्न हुए कि उन्होने तुरन्त शिवशक्ति फिल्म के लिय अनुबंधित कर लिया था। किन्तु बीमार हो जाने के कारण आप अनुबन्ध का पालन नहीं कर सके। विज्ञान परिषद् दिल्ली मे स्व0 भाभा तथा मांडव में पं0 जवाहरलाल नेहरू के समक्ष मृदंग वादन करने का आपको सुअवसर मिला।[2]

कोलम्बिया रिकार्डिंग कम्पनी ने आपकी चौताल का केवल एक रिकार्ड तैयार किया। आपके सुपुत्र श्री कालिदास तथा शिष्य श्री लक्ष्मी नारायण पवार भी कुशलतापूर्वक मृदंग वादन करते है। अर्थाभाव एवं दमे के भयंकर रोग से संघर्ष करते हुए मृदंग के इस जादूगर ने 31 जनवरी 1972 को इस लोक की यात्रा पूर्ण की।[3]

रामशंकर दास (पागलदास)

देश के सुप्रसिद्ध पखावज वादक एवं अपने उपनाम से प्रसिद्ध स्वामी पागल दास जी का जन्म 15 अगस्त 1920 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के मझौली गाँव में हुआ था। बचपन से ही बहुमुखी प्रतिभा हँसमुख स्वभाव, मिलनसान तथा सभा चातुरी गुण से सम्पन्न थें।[4]

आप कई दशकों तक मंचीय अभिनय से जुड़े रहे और साथ–साथ पखावज वादन और गायन की शिक्षा भी प्राप्त करते रहे। आपके गुरूओं में सर्वश्री रामकृष्ण दास, स्वामी भगवान दास, बाबा ठाकुर दास, श्री राम मोहिनी शरण, बाबा नेपाल सिंह

1– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 198 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

2– मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ प्यारे लाल श्रीमाल पृ0सं0 12 प्रकाशक मध्य प्रदेश शासन साहित्य।

3– ताल परिचय भाग़ 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 196, 197 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

4– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 190 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

तथा पं0 संतशरण मस्त का नाम उल्लेखनीय हैं। पखावज वादन में आप महाराज कुदऊ सिंह घराना तथा अवधी घराने का प्रतिनिधित्व करते थें। पहले आप तबला भी बजाते थे किन्तु सन् 1962 से इसे त्याग दिया और केवल पखावज को उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित कराने में जीवन अर्पित कर दिया।[1]

स्वामी पागल दास को विभिन्न प्रदेशों में अभिनन्दित व सम्मानित करने के साथ ही सुरसिंगार–संसद बम्बई द्वारा ताल–विलास तथा उत्तर प्रदेश संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। आप आकाशवाणी व दूरदर्शन में टॉप ग्रेड के कलाकार होने के साथ ही म्यूजिक आडिशन बोर्ड आदि एकाधिक मान्य संस्थाओं के सदस्य भी रहें।[2]

स्वामी पागलदास ने देशभर में घूम–घूमकर पखावज तथा ध्रुपद शैली की उपेक्षा के विरूद्ध परचम बुलंद किया और अपनी मृदंग की थाप से पूरे संगीत जगत को झकझोर दिया। इनकी चुनौतियों का सामना संगीत जगत की ठेकेदारी करने वाले झेल नही पाए। इनकी प्रथम गर्जना संगीत जगत ने सन् 1960 में ग्वालियर के तानसेन संगीत समारोह के समय सुनी। जब इन्हे समारोह में अपनी कला के प्रदर्शन की अनुमति नही मिली तो इन्होने पूरे आत्मविश्वास के साथ बिना किसी स्रोत की उपस्थिति के तानसेन के मजार पर मृदंग वादक प्रारम्भ कर दिया। इनके मृदंग की गूंज ने संगीत सम्मेलन में उपस्थित दिग्गज संगीतकारों के कान खोल दिए। तब इनके प्रिय वाद्य पखावज को पहली बार वह सम्मान मिला, जिसके ये इच्छुक थे और जिसके लिए इनका संघर्ष था।[3]

1– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 210 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।
2– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 1401 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।
3– संगीत अंक 8 अगस्त 1986 संतोषदास पृ0सं0 29, 30 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस उ0प्र0।

मात्र नौ महीने की स्कूली शिक्षा पाए स्वामी पागलदास ने स्वाध्याय और अपने बौद्धिक बल पर हर क्षेत्र में योग्यता प्राप्त की है। अब तक मृदंग तबला प्रभाकर (दो भाग) तबला, कौमुदी (दो भाग) गए दिन राष्ट्रीय व भक्तिपरक पद तथा रसना रसायन पुस्तकों के अतिरिक्त विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं (संगीत मासिक के मृदंग अंक सहित) में इनके सैकड़ो शोधपरक लेख भी प्रकाशित हो चुके है।[1]

स्वामी पागलदास ने लगभग तीन दशकों की साधना से पखावज को व्यापक बनाने के साथ ही उसे अपना इष्टदेव ही मान लिया था। उनका जय मृदंग का घोष सारे संसार में गूँजने लगा था और देश के सुप्रसिद्ध संगीत मनीषियों ने एक स्वर से यह स्वीकार लिया कि स्वामी पागलदास ने पखावज को पुनः प्रतिष्ठित कर दिया है। वस्तुतः स्वामी पागलदास स्वयं पखावज की पहचान बन गए थे।

20 जनवरी सन् 1997 की रात्रि को हृदय गति रूक जाने से स्वामी पागलदास का अयोध्या में निधन हो गया।[2]

भृगुनाथ लाल मुंशी

प्रसिद्ध मृदंग वादक मुंशी भृगुनाथ लाल का जन्म गाध्यपुरी नगर के गौसपुर नामक ग्राम में ज्येष्ठ कृष्णा दशमी संवत् 1921 वि0 को एक प्रतिष्ठित कायस्थ घराने में हुआ। प्रारम्भ मे नौ–दस वर्ष तक आपको अरबी और फारसी की शिक्षा मिली। इसके पश्चात् गाजीपुर आकर आप अंग्रेजी, हिन्दी, बंगला और संस्कृत का अभ्यास भी करते रहे।[3]

जब आपकी आयु 20 वर्ष के लगभग हुई तब आपको संगीत कला से प्रेम होने लगा। पं0 ब्रजभूषण से आपने मृदंग बाज की शिक्षा पाई एवं मदनमोहन जी से अनेक तालो के भेद प्राप्त करके ताल मंजरी पुस्तक की रचना की, जिसके तीन भाग प्रकाशित हुए।

1– संगीत अंक 8 अगस्त 1986 संतोषदास पृ0सं0 29, 30 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस उ0प्र0।

2– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 1401 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

3– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 805 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

मुंशी जी ने कलकत्ता आकर जब मृदंग वादन का प्रदर्शन किया, तो आपकी कला से बहुत से बंगाली प्रभावित हुए और अनेक शिष्य बन गए। तत्पश्चात् आपने वंशीमंजरी नामक पुस्तक लिखी जो चार भागो में प्रकाशित हुई। इनमे 6 राग 30 रागिनियाँ और उनके पुत्र व पुत्रवधु आदि समस्त राग–परिवार की स्वर लिपियाँ थी।[1]

उसकी मुख्य विशेषताये इस प्रकार है–

1. आपने दण्ड (1) का प्रयोग ताल के काल खण्डों के लिये न करके प्रत्येक मात्रा के ऊपर खड़ी रेख का प्रयोग किया जैसे धा धा
2. मन्द, मध्य और ताल सप्तक के लिये बिन्दु (.) का प्रयोग भातखण्डे लिपि पद्धति की भांति ही किया।
3. कोमल स्वर के लिये स्वर के ऊपर त्रिभुज (△) चिन्ह बनाया जैसे – रे△ग△
4. तीव्र स्वर दर्शाने के लिये स्वर के ऊपर (क) इस प्रकार का चिन्ह बनाया जैसे म^{क}
5. मात्रा में एक से अधिक पटाक्षरों को, भातखण्डे पद्धति के अनुरूप चिन्ह ऐसे चिन्ह में रखा। जैसे– तिरकिट
6. अवग्रह के लिये उसी स्वर का बार–बार प्रयोग किया और गीत की पंक्ति में अवग्रह के स्थान पर शून्य (0) का प्रयोग किया।

मुंशी भृगुनाथ लाल जी की मृत्यु कलकत्ता में संवत् 1973 वि0 के लगभग हुई।[2]

बलवंतराव पानसे

आप पानसे घराने के संस्थापक नाना पानसे के सुपुत्र थे। पिता समान ही योग्य कुशल प्रतिभा सम्पन्न कलाकार थे। आपने अपने पिता से तबला और पखावज की शिक्षा प्राप्त की।

1– हमारे संगीत रत्न लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 658, 659 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

2– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 208 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

पिता की आज्ञा पाकर अपने संगीत गोष्ठियां में भी भाग लेना प्रारम्भ कर दिया। इस तपस्वी को जिसने भी सुना वाह–वाह कर उठा। थोड़े ही दिनो में इनकी कीर्ति चारों ओर फैल गई।[1]

बलवन्तराव का व्यक्तित्व बड़ा सुन्दर और आकर्षक था। पिता के समान ही आपका स्वभाव भी बहुत सरल और मधुर था। दुर्भाग्य से ऐसे कला रत्न की मृत्यु युवावस्था में ही हो गई। इनके असामयिक निधन से संगीत संसार की एक बड़ी हानि तो ही हो गई, परन्तु इनके पिता नाना साहब के ह्रदय पर तो मानो वज्रपात ही हो गया ओर वे इस शोक के कारण अधिक दिनो तक जीवित न रह सके।[2]

गोविन्दराव देवराव बुरहानपुरकर

आप मध्य प्रदेश के निमाड़ जिले के बुरहानपुर नामक स्थान के मूल निवासी थे। आपने पखावज वादन की शिक्षा नाना साहब पानसे के शिष्य सखाराम जी से प्राप्त की। गोविन्द राव जी ध्रुपद–धमार गायन की शिक्षा हरहर बुआ कोपरगाँवकर तथा तबले में मार्ग–दर्शन हैदराबाद के पं0 वामनराव जी से प्राप्त की।[3]

पलुस्कर जी से प्रेरणा पाकर आपने मृदंग–तबला वादन सुबोध के तीन भाग तथा भारतीय ताल–मंजरी नामक पुस्तकें लिखी।

सन् 1929 में अहमदाबार में एक संगीत सम्मेलन हुआ, जिसमें सरदार वल्लभभाई पटेल के द्वारा आपको मृदंगाचार्य की उपाधि प्राप्त हुई। गान्धर्व महाविद्यालय दिल्ली के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव के अवसर पर गोविन्दराव जी को भारत के राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद ने सम्मानित व पुरस्कृत किया। मार्च सन् 1955 में संगीत नाटक अकादमी की ओर से पुनः आपका सम्मान किया गया।[4]

1– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 691 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

2– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 691 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

3– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 199 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।

4– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 332, 333 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

गोविन्दराव जी ने नर्तक उदय शंकर की कल्पना चित्र में तथा सरकारी फिल्म डिवीजन में भी वादन किया है। हिज मास्टर्स वॉयस कम्पनी ने आपके वादन के कुछ रिकार्ड भी बनाए है।

भारत के वयोवृद्ध कलाकार गोविन्दराव बुरहानपुरकर जी का 20 जून सन् 1957 में 82 वर्ष की आयु में निधन हो गया।[1]

गोविन्द भाऊ राजवैद्य

श्री गोविन्द भाऊ राजवैद्य इन्दौर के निवासी थे। इनके पिता का नाम श्री रामचन्द्र जी राजवैद्य था। वैद्यक आपका व्यवस्था था। आप महाराजा तुकोजीराव होल्कर और देवास महाराजा के राजवैद्य थे। श्री गोविन्द भाऊ का अल्पायु साहेब पानसे के प्रधान तथा कृपापात्र शिष्यों में से आप एक थे। किसी कारणवश आप नाना साहेब के यहाँ नहीं जा पाते तो नाना साहब स्वयं आपके घर आकर डायरी में एक बोल लिख जाते थे।[2]

आपके यहाँ वैद्यक सीखने वाले विद्यार्थी के लिये यह अनिवार्य था कि वह मृदंग सीखे। आपके चार पुत्र है सर्व श्री शिवजी, चन्द्रकान्त, वीरेन्द्र कुमार तथा विनायक राव। चारों ही मृदंग वादन में कुशल है। प्रथम तीन के मृदंग वादन के कार्यक्रम आकाशवाणी इन्दौर से प्रसारित होते रहते है। श्री विनायक राव देवास रहते है। ये मृदंगावादन के अतिरिक्त सितार भी बजाते हैं। इनके सितार वादन के कार्यक्रम आकाशवाणी इन्दौर से प्रसारित हुए है।[3]

1– ताल परिचय भाग 3 गिरीश चन्द्र श्रीवास्तव पृ0सं0 200 प्रकाशक रूबी प्रकाशक इलाहाबाद।
2– मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा डॉ0 शर्मिला टेलर पृ0 सं0 121 प्रकाशक नवजीवन पब्लिकेशन्स।
3– मध्य प्रदेश के संगीतज्ञ प्यारे लाल श्रीमाल पृ0सं0 9 प्रकाशक मध्य प्रदेश शासन साहित्य।

श्री गोविन्द भाऊ के पौत्र श्री पुरूषोत्तम तथा श्री रामेशचन्द्र ने पखावज वादन में विशेष ख्याति अर्जित की है। पुरूषोत्तम श्री चन्द्रकान्त राजवैद्य के तथा रमेशचन्द्र, श्री वीरेन्द्र कुमार राजवैद्य के सुपुत्र है। इन दोनों ने अल्पायु में ही आकाशवाणी द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संगीत प्रतियोगिता में भाग लिया था। पखावज वादन में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। श्री रमेश राजवैद्य को विशेष अध्ययन के लिये संगीत नाटक अकादमी दिल्ली द्वारा छात्रवृत्ति भी प्रदान की गई थी। आकाशवाणी इन्दौर, दूरदर्शन दिल्ली से इनके पखावज वादन के कार्यक्रम प्रसारित होते रहते है।[1]

पं0 तोता राम शर्मा

नाथद्वारा घराने के पं0 तोता राम शर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है।

1945 में मथुरा जिले के धमसींगा ग्राम में जन्में आपके पिता लक्ष्मण अच्छे सारंगी वादक, ध्रुवपद–गायक व मंदिर के पखावज वादक थे। पखावज–वादन की प्रारम्भिक शिक्षा पिता श्री के अतिरिक्त कुदऊ सिंह के स्व0 मुरलीधर व पं0 पुरूषोत्तम दास से प्राप्त हुई। आपको 1975 में सुर सिंगार संसद, बंबई से तालमणि उपाधि प्राप्त हुई। 1982 से दिल्ली कत्थक केन्द्र, जयपुर राज विश्वविद्यालय एवं मथुरा आकाशवाणी में मृदंग–वादक पद पर निरंतर कार्यरत रहे है।[2]

आपके वादन में माधुर्य एवं ओजगुण की प्रधानता है। आपके वादन में स्तुति परण ठेके के प्रकार का विस्तार करते हुये छोटे–छोटे मोहरे, परण, पड़ाल, चक्रदार, रेला आदि मुख्य रूप से सुनने को मिलते है। वादन के अन्तर्गत बोलों की शुद्धता गणित के कार्य पर आपका विशेष ध्यान होता है। आप ब्रज भाषा के अच्छे कवि हैं। तथा आपने अनेकों रचनाएँ तैयार की है।[3]

1– मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा डॉ0 शर्मिला टेलर पृ0 सं0 121 प्रकाशक नवजीवन पब्लिकेशन्स।

2– हिन्दुस्तानी संगीत के पखावज वादन को वल्लभ सम्प्रदाय की देन डॉ0 मधु भट्ट तैलग पृ0सं0 90 प्रकाशक राजस्थान संगीत नाटक अकादमी।

3– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 177 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

आपने देश के प्रायः गायन, वादन तथा नृत्य के प्रख्यात कलाकारों के साथ संगति की है, जिसमें गायन के कलाकारों के नाम इस प्रकार से है – डागर बंधु, प्रो0 सुम्मति मुट्टाटकर तंत्र में उस्ताद असद अली खाँ प्रमुख हैं।

आपके प्रमुख शिष्यों में श्री मोहन श्याम शर्मा, श्री फतेह सिंह गंगानी, श्री डालचंद्र शर्मा, श्री तेजपाल भारद्वाज एवं जेरी फील्ड आदि प्रमुख है।[1]

पं0 डालचन्द्र शर्मा

नाथद्वारा परम्परा के पं0 डालचन्द्र शर्मा ने अपनी प्रतिभा, परिश्रम लगन से पखावज वादन क्षेत्र में महत्वपूर्ण स्थान बना लिया हैं। वर्तमान में आप दिल्ली विश्वविद्यालय के संगीत और ललित कला संकाय में कार्यरत हैं।

पं0 डालचन्द्र शर्मा का जन्म 11 अप्रैल सन् 1965 के भरतपुर के गाँव सहेड़ा में हुआ था। आप नाथद्वारा परम्परा के एक प्रमुख पखावज वादक है। आपने प्रसिद्ध पखावजी आचार्य पं0 तोता राम शर्मा से पखावज वादन की शिक्षा ग्रहण की। दादागुरू पं0 मुरलीधर शर्मा और पद्मश्री पं0 पुरूषोत्तमदास पखावजी से भी आपको सीखने का अवसर मिला।[2]

पं0 डालचन्द्र शर्मा के वादन में तैयारी, सफाई, बोलों की छंदात्मक काट तराश, लयकारी, सम, अतीत, अनागत ग्रहों का कलात्मक प्रयोग, वजन के साथ आकर्षक सौन्दर्यात्मक प्रस्तुति, पढन्त एवं बजन्त का समन्वय, ध्वनि विविधता, पारम्परिक रचनाओं में यति, जाति का सुगम प्रस्तुतिकरण आपके वादन की सर्वाधिक विशेषताएँ हैं।[3]

1– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 177 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

2– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 446 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0।

3– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 202 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

डालचन्द्र शर्मा ने भारत के अतिरिक्त विदेशों में भी अपने पखावज वादन से श्रोताओं को विभोर किया है और लगभग सभी प्रसिद्ध ध्रुवपद गायकों के साथ संगति की है। आकाशवाणी और दूरदर्शन पर आप उच्च श्रेणी के कलाकार रहे हैं। हवेली संगीत के गायन और तबला वादन में भी आप दक्ष हैं जिसकी शिक्षा आपने वृन्दावन के बाबा जीवनदास से ली थी।[1]

आपको अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं से सम्मानित किया जा चुका है। जिनमें युवा सम्मान साहित्य कला परिषद्, टॉप ग्रेड अवार्ड आकाशवाणी दिल्ली, गाँधी साहित्य सभा द्वारा ताल शिरोमणी राष्ट्रपति भवन में आयोजित सांगीतिक कार्यक्रम में सरहानीय प्रदर्शन के लिये राष्ट्रपति ए0पी0जे0 अब्दुल कलाम द्वारा आप सम्मानित किये जा चुक हैं।[2]

आपने संगीत कार्यक्रम भारत में ही नही अपितु विदेशों में भी प्रस्तुत किया।

आपके अनेक शिष्य है जो कि पखावज वादन के क्षेत्र में अच्छा यश प्राप्त करके आपकी पखावज की नाथद्वारा परम्परा को आगे बढ़ा रहे है। इस परम्परा में सर्वश्री हरीशचन्द्रपति, मनमोहन नायक, कुमारी प्रीति सिन्हा गोपाल जाधव, महावीर गंगानी, कृष्ण वल्लभ शुक्ल, अपूर्वा लाल मन्ना, शुभाशीष घोष, तेजराम, लोगन (वेस्टइन्डीज) सलमान खान वारसी वीरभद्र भारद्वाज एवं आपके सुपुत्र रोहित शर्मा प्रमुख हैं।[3]

डॉ0 राजखुशी राम मृदंगाचार्य

डॉ0 राजखुशी राम का जन्म 3 अक्टुबर 1954 को लखनउ मे हुआ था आपके पिता का नाम पं0 खुशीराम था। पखावज की शिक्षा आपने पं0 सखाराम मृदंगाचार्य और उनके पौत्र पं0 विनायक राव से पाप्त की। पं0 सखाराम की मृत्यु के पश्चात पं0 रमाकांत पाठक जी से भी शिक्षा प्राप्त किया आपने पं0 स्वामी पागलदास से भी पखावज की विधिवत शिक्षा प्राप्त किया।

1– भारत के संगीतकार लक्ष्मीनारायण गर्ग पृ0सं0 446 प्रकाशक संगीत कार्यालय हाथरस, उ0प्र0

2– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 203, 204 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

3– पखावज की उत्पत्ति विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 204 प्रकाशक कनिष्क, पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।

आपको संगीत नाटक आकादमी लखनउ द्वारा अकादमी अवार्ड से सम्मनित किया गया। भातखंडे संगीत विद्यापीठ लखनउ द्वारा वाद्य निपुण की उपाधि और हिन्दी साहित्य सम्मेलन इलाहाबाद द्वारा साहित्य रत्न की उपाधि प्रदान किया गया। ध्रुपद कला केन्द्र इन्दौर द्वारा पखावज श्री, सुर सिगार संसद द्वारा ताल माणि और सरस्वती सम्मान से समानित किया गया। यही नही आपको अनेको जहॉ मान–सम्मान मिला।

आपने इन्दिरा कला संगीत महाविद्यालय खैरागढ के द्वारा पखावज का अवधी घराना एंव उसमें पागलदास का योगदान विषय में पी0एच0डी0 की उपाधि प्राप्त की। आपने सोलो वादन के साथ साथ अनेको महान कलाकारों के साथ भी संगीत किया है जिसमें गोपी कृष्ण, सितारा देवी ध्रुपद धमार गायक पं0 विदुर मल्लिक पं0 सियाराम तिवारी, डागर बंधु गुॅदेचा बंधु, अभय नारायण मल्लिक प्रमुख है।

आपने लक्ष्मीकांत प्यारेलाल द्वारा निर्देशित फिल्म नाचे मयुरी मै भी पखावज वादन किया है।

चित्रांगना पंत आगले

चित्रांगना आगले का जन्म संगीतज्ञों के परिवार में सन् 1972 को इन्दौर में हुआ। आपके पितृ पक्ष से पखावज की एक व्यवस्थित परम्परा चली आ रही और इसी परम्परा के अन्तर्गत आप चौथी पीढी की कलाकार हैं।

सखाराम पंत आगले की वंशज, पं0 अम्बादास पन्त आगले की पौत्री एंव पं0 कालिदास पंत आगले की सुपुत्री चित्रांगना पखावज वादिका के रूप में विशेष ख्यातिलब्ध कलाकारा है। आपके पिता पं0 कालीदास पंत आगले एंव बडे भाई संजय पंत आगले भी पखावज के अच्छे कलाकार हैं।[1]

1– पखावज की उत्पत्ति, विकास एवं वादन शैलियाँ डॉ0 अजय कुमार पृ0सं0 217 प्रकाशक कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रब्यूटर्स नई दिल्ली।

आपने पखावज वादन की प्रारम्भिक शिक्षा आपने पिता से प्राप्त की। इसके पश्चात् उस्ताद अलाउद्दीन खॉ सगीत नाटक अकादेमी भोपाल द्वारा चयनित होकर उच्च शिक्षा हेतु महाराज छत्रपतिसिंह जुदेव के पास बिजना मे पॉच वर्ष रहकर मृदंग की विधिवत शिक्षा ग्रहण की। कठिन साधना द्वारा कु. चित्रांगना ने बोलो के निकास, तैयार और लय पर अधिकार प्राप्त कर लिया परिणामस्वरूप संगीत सम्मेलनों मे आपको आमन्त्रित किया जाने लगा।

कई कार्यक्रमों तथा सम्मेलनों में कु0 चित्रागना को एकल वादन, संगीत तथा अपने गुरू के साथ वादन करने का अवसर प्राप्त हुआ। भारत–भवन भापल, ध्रुपद मेला बनारस,बेरम खॉ ध्रुपद समारोह जयपुर, ध्रुप मेला वृन्दावन, झॉसी और नासिक, अभिनव कला समाज इन्दौर तथा तानसेन समारोह ग्वालियार मै भी आप कार्यक्रम प्रस्तुत कर चुकी है। दीपिका संस्था दिल्ली द्वारा ताल आयोजित कचहरी में भाग ले चुकी है। महर्षि डॉ0 अण्णा साहेब गुंजकर संगीत संस्था औरंगाबाद ने अक्टूबर 1991 में आपका सम्मान किया। औरंगाबाद आकाशवाणी में आपका साक्षात्कार भी लिया।[1]

उद्धव शिंदे

वर्तमान समय मे श्री उद्धव शिंदे पखावज के क्षेत्र में अद्वितीय कलाकार है। आपके परिवार में चार पीढियों से पखावज वादन चला आ रहा है। आप के पिता पद्मश्री पं0 शंकर राव बापू शिंदे पखावज के महान कलाकार थे आपने बाल्यकाल से ही पखावज वादन की शिक्षा अपने पिता से प्राप्त किया। और आप के पिता पं0 शंकर राव बापू शिंदे ने पखावज वादन की शिक्षा मथुरा के मक्खन जी भईया से प्राप्त किया था। आप एकल वादन के साथ–साथ उच्चकोटि के कलाकारों के साथ संगत भी करते आ रहे है। आपने सम्पूर्ण भारत में विभिन्न संगीत–समारोह में अपनी कला का प्रदर्शन किया जैसे, ध्रुपद समारोह, अहमदाबाद का सप्तक समारोह जलान्धर समारोह आदि। आप स्पीक मैके से भी जुडे हुए है । भारत ही नही विदेशो मे भी अपने अपनी कला का प्रदर्शन किया वर्तमान समय में आप अनेको शिष्यो को पखावज की शिक्षा प्रदान कर रहे है।

1– मालवा में ध्रुपद शैली की परम्परा डॉ0 शर्मिला टेलर पृ0सं0 128.129 प्रकाशक नवजीवन पब्लिकेशन्स।

पं0 पन्नालाल उपाध्याय

पं0 पन्नालाल उपाध्याय गया परम्परा के वरिष्ठ एवं प्रसिद्ध पखावज वादक है। आप का जन्म सन् 1942 में गया जिले के ईसरपुर गॉव में हुआ। आपके पिता का नाम पं0 बलदेव उपाध्याय तथा माता का नाम श्रीमती कमला देवी था। आपने पखावज की तालीम अपने पिता पं0 बलदेव उपाध्याय से कठिन परिश्रम के बदौलत जल्द ही प्राप्त कर लिया।

पखावज वाद्य में थापी, निकास, तैयारी एवं माधुर्य इनके वादन की विशेषता रही है, कई नेशनल प्रोग्राम एवं आकाशवाणी संगीत सम्मेलनों मे संगत और स्वतन्त्र वादन प्रस्तुत किया। आपने सभी ख्याति प्राप्त ध्रुपद गायक पं0 रामचतुर मलिक, सियाराम तिवारी, पं0 राम चतुर मल्लिक, पं0 विदुर मल्लिक, पं0 प्रेम कुमार मल्लिक तथा डागर बंधु के साथ पखावज की सफल संगति की।

आप उच्च श्रेणी के कलाकार थे। वाराणसी से ध्रुपद मेला में आपकी पं0 भरत जी व्यास द्वारा नवशम्भु की उपाधि से विभूषित किया गया। आपके शिष्यों में मदन मोहन उपाध्याय, आशुतोष कुमार उपाध्याय, डॉ0 अनिल चौधरी, अमरेश पाठक एवं गौतम जी है।

पं0 मदन मोहन उपाध्याय

पं0 मदन मोहन उपाध्याय वर्तमान समय में वरिष्ठ एवं जाने माने तबला वादन/पखावज वादक है। आपने पखावज की शिक्षा अपने पिता पं0 बलदेव उपाध्याय से प्राप्त किया। पिता की मृत्यु के उपरान्त अपने बड़े भाई पं0 पन्नालाल उपाध्याय जी से बाकी की शिक्षा पूर्ण की।

देश के प्रायः सभी संगीत सम्मेलनों में आपने अपनी कला का प्रदर्शन किया। तबला वादन होते हुए भी कई संगीत सम्मेलनों में पखावज वादन प्रस्तुत करके इस परम्परा का नाम और यश को बढ़ाया। आपके अनेक शिष्य है जिसमें पखावज में मृणाल मोहन उपाध्याय एवं मजीत मोहन उपाध्याय प्रमुख है।

1– पं0 मदन मोहन उपाध्यास से प्राप्त जानकारी पर आधारित है।

डॉ0 अनिल चौधरी

डॉ0 अनिल चौधरी पेशे से नेत्र चिकित्सक है साथ ही पखावज के क्षेत्र में आप टॉप ग्रेड कलाकार है। आपकी शिक्षा बाल्यकाल में ही आपके नाना स्व0 यमुना प्रसाद चौधरी द्वारा हुई। जो पखावज के मर्धुन्य कलाकार थे। स्व0 यमुना प्रसाद चौधरी ने अपनी शिक्षा कुदऊ सिंह घराने के अयोध्या निवासी बाबा ठाकुर दास जी साधु से प्राप्त किया।

आपने राम आशीष पाठक से भी पखावज की शिक्षा प्राप्त की। पखावज को आपने पूजा के रूप में अपनाया है। भारत के कई संगीत समारोह में आपने सोलो एवं संगत वादन प्रस्तुत किया और कर रहे है। विदेशो में भी I.C.C.R. की तरफ से कनाड़ा, ईरान, सीरिया आदि देशो में अपनी कला का प्रदर्शद किया। आप अनेको शिष्यों को पखावज की शिक्षा प्रदान कर रहे साथ ही पखावज कला को आप आगे ले जा रहे है।[1]

श्री उदय कुमार मल्लिक

दरभंगा घराने के श्री उदय कुमार मलिक पखावज के अद्वितीय कलाकार है। आप खासा पखावज वादक है। आपने अपनी शिक्षा पिता पं0 चन्द्रकुमार मलिक से प्राप्त किया। चन्द्र कुमार मलिक ने पं0 विष्णुदेव पाठक से पखावज की विधिवत शिक्षा प्राप्त की थी।

पखावज के क्षेत्र में आप ए ग्रेड कलाकार है। दूरदर्शन के आप नियमित कलाकार है। अल्प आयु से आप अपनी कला का प्रदर्शन विभिन्न समारोह में करते आ रहे हैं।[2]

1– यह साक्षात्कार पर आधारित है।
2– यह साक्षात्कार पर आधारित है।

पं0 रविशंकर उपाध्याय

गया घराने के पं0 रविशंकर उपाध्याय पखावज के अद्वितीय कलाकार है। आपके पिता पं0 राम जी उपाध्याय ख्याति प्राप्त पखावज वादक थे तथा देश के प्रायः सभी संगीत समारोहों में पखावज वादन कर पखावज का मान सम्मान बढ़ाया। आपकी सम्पूर्ण शिक्षा आपके पिता के निर्देशन में हुई।

वर्तमान समय में आप कत्थक केन्द्र (दिल्ली) में पखावज गुरू के पद पर कार्यरत है एवं आकाशावाणी और दूरदर्शन के उच्च श्रेणी के कलाकार है। आपने भारत ही नही विदेशों में भी अपनी कला का प्रदर्शन किया एवं कई सम्मान प्राप्त किये।

मृणाल मोहन उपाध्याय

गया (परम्परा) घराने के युवा पखावज वादक मृणाल उपाध्याय पं0 मदन मोहन उपाध्याय के पुत्र है। बचपन से ही आप पखावज की ओर आकर्षित हो गये। अपने पिता पं0 मदन मोहन उपाध्याय से पखावज की शिक्षा प्राप्त किया और अपने अथक परिश्रम की बदौलत कम उम्र में ही उत्तम पखावज वादक बन गये। उ0प्र0 संगीत नाटक अकादमी द्वारा आयोजित वर्ष 1995 में किशोर वर्ग के लिए प्रथम पुरस्कार एवं वर्ष 1996 में युवा वर्ग में प्रथम स्थान प्राप्त किया। वर्ष 1999 में सुर–श्रृंगार संसद द्वारा ''तालमणि'' की उपाधि प्राप्त की। राष्ट्रीय युवा कलाकार वैदिक हैरिटेज में भारत से चयनित होकर यू0एस0ए0 में जाकर पखावज वाद्य में प्रथम स्थान घोषित हुए। आप विभिन्न संगीत कार्यक्रमों में अपना पखावज वादन प्रस्तुत करते आ रहे है।

.....